ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)–848125

बुलेटिन संख्या–71
दिनांक– शुक्रवार, 19 सितम्बर, 2025

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेधशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 30.1 एवं 24.2 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 98.0 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 88.0 प्रतिशत, हवा की औसत गति 3.7 कि0मी0 प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पन 1.2 मि0मी0 तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन 0.7 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से0मी0 की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 29.3 एवं दोपहर में 32.8 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में 50.1 मि0मी0 वर्षा रिकार्ड हुई।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(20–24 सितम्बर, 2025)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 20 से 24 सितम्बर, 2025 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमानित की अवधि में आसमान में हल्के से मध्यम बादल छाये रह सकते है। अगले 12–24 घंटों में मैदानी तथा तराई के जिलों में कुछ स्थानों पर अच्छी वर्षा हो सकती है। एक–दो स्थानों पर आकाशीय बिजली गिरने की भी संभावना है। 20 सितम्बर के दोपहर के बाद आमतौर पर मौसम शुष्क रहने की सम्भावना है।
- इस अवधि में अधिकतम तापमान 32–33 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकता है। न्यूनतम तापमान 26–27 डिग्री सेल्सियस के आस–पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90–95 प्रतिशत के आसपास तथा दोपहर में 62–65 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 3 से 7 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से पूर्वा हवा चलने की संभावना है।

समसामयिक सुझाव

- उत्तर बिहार में हाल ही हुई अच्छी बारिश और अगले 12–24 घंटों में संभावित बारिश को देखते हुए किसान भाइयों को सलाह दी जाती है कि वे इस अवधि के दौरान कीटनाशी दवाओं का छिड़काव न करें। छिड़काव तभी करें जब आसमान साफ हो। धान, मक्का, खरीफ प्याज, चारा और अन्य सब्जियों की फसलों में आवश्यकता अनुसार नत्रजन उर्वरक दें। साथ ही, बारिश होने की संभावना के कारण खड़ी फसलों की सिंचाई भी स्थगित रखें।
- अगात बोयी गई धान की फसल जो गाभा निकलने की अवस्था में आ गयी हो, उसमें 30 किलोग्राम नेत्रजन प्रति हेक्टेयर की दर से उपरिवेषन करें। धान की फसल जो दुग्धाअवस्था में आ गयी हो उसमें गंधी बग कीट की नियमित रुप से निगरानी करें। इस कीट के शिशु एवं पौढ़ दोनों जब पौधों में बाली निकलती है तो यह बालियों का रस चुसना प्रारंभ कर देती हैं जिससे दाने खोखले एवं हल्के हो जाते हैं तथा छिलका का रंग सफेद हो जाता है। धान की दुग्धावस्था में यह पौधों को अधिक क्षति पहुचाती है जिससे उपज में काफी कमी होता है। इसके शरीर से विशेष प्रकार का बदबु निकलती है, जिसकी वजह से इसे खेतों में आसानी से पहचाना जा सकता है। इसकी संख्या जब अधिक हो जाती है तो एक–एक बाल पर कई कीट बैठे मिलते है।
- लत्तीदार वाली सब्जियों की फसलों में फल मक्खी कीट की निगरानी करे। मादा मक्खी लत्तीदार सब्जियों के कोमल फलों के अन्दर अण्डे देती है। ग्रसित फलों के छेद से लसदार हल्के भूरे रंग का द्रव निकलता है जो सुखने पर खुरदरे खुरट का रुप ले लेता है। अण्डे से मैगोट बनते ही वह गुद्दे को खाकर स्पंज जैसा बहुत सारे छेद कर देता है। जिससे फलों में सड़न प्रारंभ हो जाती है। क्षतिग्रस्त फल पतला टेढ़ा–मेढ़ा, कभी–कभी तो पीले पड़कर डंठल से अलग होकर गिर जाते है। यह मैगोट एक फल को खाने बाद फूदककर दूसरे फल को खाता है। क्षतिग्रस्त फल खाने योग्य नही रहता। कीट नियंत्रण के लिए सर्वप्रथम सभी क्षतिग्रस्त फलों को इक्ठा कर नष्ट कर दें। मिथाइल यूजीनोल ट्रेप का प्रयोग करे। अधिक क्षति होने पर 1 किलोंग्राम छोआ एवं 2 लीटर मैलाथियान 50 ई0सी0 तरल दवा को 800 से 1000 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर से फसल में समान रुप से छिड़काव आसमान साफ रहने पर हीं करें।
- भिंडी की फसल में फल एवं प्ररोह वेधक कीट की निगरानी करें। इसके पिल्लू भिंडी फलों के अन्दर छेद बनाकर उसके अन्दर घुसकर फलों को खाते हैं तथा इसे पूरी तरह नष्ट कर देते हैं। इसकी रोक–थाम के लिए सर्वप्रथम प्रभावित फलों को तोड़कर मिट्टी के अन्दर दबा दें। अधिक नुकसान होने पर क्वीनालफॉस 25 ई0सी0 दवा का 2 मि0ली0 प्रति लीटर पानी या डाईमेथोएट 30 ई0सी0 दवा का 1.5 मि0ली0 प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर आसमान साफ रहने पर छिड़काव आसमान साफ रहने पर हीं करें।
- मिर्च, बैगन, टमाटर वाली सब्जियों की नर्सरी में लाही, सफेद मक्खी व चूसक कीड़ों की निगरानी करें। ये कीट विषाणु जनित रोग के लिए वाहक का काम करते है जिससे पौध के पत्ते टेढ़े–मेढ़े होकर सिकुड़कर रोगग्रस्त हो जाते है। यह बड़ी तेजी से एक–पौधें से दूसरे पौधे में फैलता है। इससे बचाव के लिए इमिडाक्लोरोप्रिड दवा का 0.3 मि.ली. प्रति लीटर पानी की दर से घोल कर छिड़काव आसमान साफ रहने पर हीं करें।
- दुधारु पशुओं में बरसात के अन्त में यकृत कृमि (लिवर फ्लुक) एवं एम्फीस्टोम का संक्रमण खासकर नदी या तालाब के पानी से संक्रमित चारा खाने से बहुत अधिक होता है। इससे वचाव के लिए ऑक्सीक्लोजानाईड एवं लिबामिजोल 100 मि0ली0 खाली पेट पशुओं को अवश्य पिलायें।

आज का अधिकतम तापमानः 32.8 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 0.3 डिग्री सेल्सियस अधिक	आज का न्यूनतम तापमानः 24.8 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 0.9 डिग्री सेल्सियस कम

(डॉ0 ए. सत्तार)
नोडल पदाधिकारी